आमुख

डॉ. उमेश दत्त तिवारी

भोजपुरी, हिन्दी की एक उपभाषा अथवा बोली (डायलेक्ट) है। इसकी भौगोलिक सीमा तीन प्रान्तों- पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बिहार और उत्तरी-पूर्वी मध्यप्रदेश तक फैली है। यह सीमा पश्चिम में अवधी, उत्तर में नेपाली, पूर्व में मैथिली एवं मगही और दक्षिण में छत्तीसगढ़ी बोलियों के क्षेत्र को छूती है। इस भौगोलिक/भाषायी क्षेत्र में उत्तर प्रदेश के मीरजापुर, बनारस, जौनपुर, गाजीपुर, आजमगढ़, बलिया, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया और पड़रौना से लेकर फैजाबाद के कुछ हिस्से; बिहार में चम्पारण, सारण (छपरा, सिवान, गोपालगंज), मुजफ्फरपुर, शाहाबाद, राँची, पलामू, आरा, बक्सर, रोहतास एवं सासाराम; और मध्यप्रदेश/ छत्तीसगढ़ के सरगुजा एवं जसपुर के पूर्वी हिस्से आते हैं।

भोजपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र २५ जिलों के करीब ५० हजार वर्गमील में फैला है और इस भाषा को बोलने वाले आज १० करोड़ से भी अधिक लोग हैं।[१] यह भाषा इस क्षेत्र के लोगों के साथ देश-विदेश के विभिन्न भागों में भी फैली है।

कुछ वे भारतीय, जिनके पूर्वज दूर के देशों, जैसे-नेपाल, मॉरिशस, सूरीनाम, गुयाना, युगांडा, बैंकांक, रंगून, सिंगापुर, फीजी आदि देशों में जाकर बस गये, वे भी किसी न किसी रूप में भोजपुरी को जीवित रखे हुए हैं। इस तरह भोजपुरी का क्षेत्र व्यापक है। कुछ लोगों की यह धारणा रही है कि मॉरिशस में एकमात्र ''क्रियोल'' में ही लोक साहित्य विद्यमान है, लेकिन नहीं, वहाँ लोक साहित्य भोजपुरी में भी है[२] और काफी विकसित है। क्रियोल और भोजपुरी अलग-अलग हैं। मोका स्थित महात्मा गाँधी संस्थान ने १९७६-७७ में मौखिक रूप से प्रवाहमान भोजपुरी लोक साहित्य को सुरक्षित करने के उद्देश्य से एक ''डाक्यूमेन्टेशन सेन्टर'' की स्थापना की थी, जहाँ लोक-कथाओं, गीतों, कहावतों, मुहावरों, पहेलियों आदि के संकलन का कार्य प्रारम्भ हुआ था। लोक साहित्य के अध्ययन एवं अनुसंधान की दिशा में वहाँ यह प्रथम प्रयास नहीं था, बल्कि इ स संस्था की स्थापना के बहुत पहले ही (स्व.) डॉ. रामेश्वर ओर ने अपने शोध-प्रबन्ध ''मॉरिशस की भोजपुरी'' में भोजपुरी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया था। मॉरिशस की भोजपुरी में और भी कार्य हुए हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों से जुड़कर भी मॉरिशसवासी भोजपुरी में कार्य करते रहे हैं। इसी प्रकार भारतीय शोधार्थियों ने मॉरिशस में जाकर भोजपुरी में कार्य किया है। आज भारतीय भोजपुरी के साथ अन्य देशों के भोजपुरी के तुलनात्मक अध्ययन की भी आवश्यकता है।

भोजपुरी प्रदेश का अधिकांश भू-भाग मैदानी है। इसमें गंगा, गंडक, गोमती, सोन, घाघरा, कोसी आदि छोटी-बड़ी कई नदियों का प्रवाह है, जो इस क्षेत्र को हरा-भरा बनाये रखती हैं। सारण एवं चम्पारण नाम तो आरण्य से ही उद्भूत हैं, जो यह इंगित करते हैं कि यह क्षेत्र अत्यन्त प्राचीन काल से ही जंगलों एवं वनौषधियों से अच्छादित रहा है और यहाँ नाना प्रकार के जीव-जन्तुओं और पशु-पक्षियों का वास रहा है। यहाँ तीनों मौसम और छहों ऋतुओं के समान चक्र से पूरा वातावरण काफी सुहावना बना रहता है। ऐसे परिवेश में स्वाभाविक रूप से कृषि एवं पशु-पालन यहाँ के लोगों की जीविका के प्रधान साधन रहे हैं। इस क्षेत्र में प्रायः हर प्रकार के अन्न और दलहन एवं तिलहन की पैदावार होती है। बिहार एवं उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग में बड़े पैमाने पर गन्ने की खेती होती है, इसीलिए इस क्षेत्र में गुड़, खाण्डसारी एवं चीनी के कारखाने थोड़ी-थोड़ी दूर पर ही दिखाई पड़ते हैं। आरण्यक क्षेत्र होने की वजह से इस भू-भाग में अनेक सुप्रसिद्ध ऋषियों-मुनियों का भी वास रहा, जैसे आरा में महर्षि विश्वामित्र का, तो सारण में गौतम मुनि का आश्रम रहा।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

पूरा भोजपुरी क्षेत्र शौर्य, पराक्रम एवं मस्ती के लिए प्रसिद्ध है। सुप्रसिद्ध लोक-साहित्य 'लोरिकायन', जिस लोरिकदेव की वीरता का आख्यान सुनाता है, वह बलिया-छपरा के द्वाब के ही रहने वाले थे। इसका उल्लेख आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में भी हुआ है। भोजपुरी क्षेत्र के लोग धर्मभीरु तो बहुत हैं, किन्तु साथ ही अत्यन्त कर्मठ और स्वाभिमानी भी हैं। अपने परिश्रमी होने की पहचान इन लोगों ने मॉरिशस, फिजी, ट्रिनीडाड, सूरीनाम आदि देशों में भी जाकर करायी है। अपनी भाषा, संस्कृति और मिट्टी से इन्हें काफी प्रेम है, इसीलिए मॉरिशस, फिजी आदि देशों में रहकर भी भोजपूरिया लोगों ने अपनी इस भाषा व संस्कृति को हमेशा जीवन्त बनाये रखा। भोजपुरीवासियों की वीरता के अनेक मिसाल उपलब्ध हैं। ब्रिटिश काल में १८५७ के विद्रोह का नेतृत्व इसी क्षेत्र के बलिया जनपद ने किया था, १९४२ की क्रान्ति में भी इस क्षेत्र की अहम भूमिका रही थी। स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता और प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद इसी क्षेत्र (सिवान) के रहने वाले थे, जो राष्ट्रपति भवन में भी ठेंठ गंवई अंदाज में रहते थे और भोजपुरी में खुलकर बातें करते थे। सम्पूर्ण क्रान्ति के पुरोधा लोकनायक जयप्रकाश नारायण, सुप्रसिद्ध सर्वोदयी नेता बाबा राघवदास और सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सम्पूर्णानन्द भी इसी भोजपुरी भाषी क्षेत्र के थे। गाँधी जी ने अपने स्वतंत्रता आन्दोलन को एक नयी धार देने के लिए इसी भोजपुरी प्रदेश के चम्पारण क्षेत्र को चुना था। भोजपुरी के ख्यातिलब्ध नाटककार, विदेशिया नाटक मंडली के संस्थापक स्व. भिखारी ठाकुर छपरा के ही रहने वाले थे।

भोजपुरी लोक-संस्कृति के सभी तत्व, खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन, तीर्थ-त, धर्म-कर्म, मनोरंजन, कला-प्रेम, खेती-बारी, पशु-पालन आदि यहाँ की भाषा-बोली; यथा -कहावतों, मुहावरों, पहेलियों, गीतों, विभिन्न पद-बन्धों और ठेठ शब्दों में पूरी तरह परिलक्षित हैं। भोजपुरीवासियों में धर्मभीरुता और अशिक्षा की अधिकता के कारण इस क्षेत्र में लोक-विश्वास एवं रूढ़ियाँ भी काफी दिखाई देंगी। यहाँ भूत-प्रेत, जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, शकुन-अपशकुन, दिशा-शूल, शुभ-अशुभ, तिथि-नक्षत्र आदि की मान्यताओं के विश्वासी भी बहुत मिलेंगे। इस क्षेत्र के प्रायः हर गाँव में एक ब्रह्मस्थान पाया जाता है, जहाँ गाँववासी कोई भी नया अथवा मांगलिक कार्य करने से पहले अनुष्ठान/पूजा-पाठ अथवा मनौती अवश्य करते हैं।

भोजपुरी क्षेत्र में मनोरंजन के प्रमुख साधन कुश्ती, दंगल, नाच, नौटंकी आदि रहे हैं, जहाँ ग्रामीणों की भारी भीड़ उमड़ती रही है। विदेशिया नाटक मंडली क्षेत्र में घूम-घूमकर नृत्य-नाटिकाओं का प्रदर्शन किया करती थी। अहीर जाति के लोगों का नगाड़े की धुन पर फर्री का नृत्य और चमार जाति के लोगों का हुड्डुक नृत्य भी प्रसिद्ध रहा है।

यहाँ चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला भी अपने ढंग की निराली रही है। व्याह एवं यज्ञोपवीत के अवसर पर घर के बाहरी दिवालों पर हाथी, घोड़े एवं सिपाही के चित्र अब भी बनाये जाते हैं। लड़की के विवाह के समय कोहबर वाले कमरे में भी चित्रकारी की जाती है। द्वारपूजा के समय दरवाजे पर आटे का चौका पूरा जाता है, जो ज्यामितीय आकार का होता है। कलश पर अल्पना बनायी जाती है। कुँवारी या नव-विवाहित कन्यायें हाथों में मेंहदी रचती हैं, जो चित्रात्मक होती है। व्याह-यज्ञोपवीत के समय आँगन में कलात्मक मण्डप बनाये जाते हैं।

प्रस्तुत डिजिटाइज्ड ग्रन्थ 'भोजपुरी लोक-साहित्य एवं संस्कृति' में भोजपुरी भाषा-भाषी प्रदेश के उपरोक्त सभी सांस्कृतिक तत्वों पर कहावतों, मुहावरों, पहेलियों, बच्चों के खेल-गीत, लोकोक्तियों, लोकगीतों, ठेठ ग्रामीण शब्दों आदि के माध्यम से प्रकाश पड़ा है। इसमें ग्रामीणजनों की भाषा-बोली को ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया गया है। इस संकलन में ऐसे शब्द भी मिलेंगे, जिन्हें शिक्षित लोग अप-शब्दों की श्रेणी में रखते हैं, किन्तु ग्रामीण जीवन में जो कुछ वास्तविक एवं यथार्थ है, चाहे वह सभ्यता की श्रेणी में हो अथवा असभ्यता की श्रेणी में, उनपर इन संकलनों के माध्यम से एक जरूरी प्रकाश पड़ा है। इसके बिना ग्रामीण जीवन की पूरी तस्वीर सामने नहीं आ सकती।

लोक-संस्कृति लोक-जीवन का अविभाज्य अंग है और उसे लोक-साहित्य के माध्यम से भी काफी कुछ समझा जा सकता है यह संस्कृति सनातन से स्वतः ढलती, बनती और बिगड़ती चली आयी है। उसमें लोक-जीवन के नाना अनुभवों के सार समाये हुए हैं, जिसे किसी शिष्ट/शास्त्रीय साहित्य में नहीं पाया जा सकता। लोक-साहित्य लोक-जीवन का दर्पण है, जिसमें वह सब कुछ दिखाई देगा, जिसे हम लोक में देखना चाहते हैं अथवा लोक में जो कुछ व्याप्त है।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कति

लेकिन आधुनिकता के साथ तेजी से हो रहे संक्रमण के वर्तमान दौर में जैसे-जैसे लोक-जीवन का रंग-ढंग बदलते जा रहा है, वैसे-वैसे लोक-संस्कृति एवं लोक साहित्य का स्वरूप भी क्रमशः बदलते जा रहा है। प्रस्तुत संकलन में ऐसी तमाम बातें मिलेंगी, जो भोजपुरी क्षेत्र के अनेक हिस्सों में अब या तो लुप्त हो चुकी हैं या लुप्त होने के कागार पर हैं। जैसे बच्चों के खेल-गीत के अन्तर्गत संकलित बहुत से गीत अब अतीत या इतिहास की बातें हो चुकी हैं, यद्यपि चालीस वर्ष से अधिक आयु वाले लोग उन्हें याद कर आज भी अतीत की सुखद अनुभूतियों से भर जाते हैं। फिर भी इन सामग्रियों का संकलन व संरक्षण अतीत को जानने और उससे प्रेरणा लेने में काफी सहायक, उपयोगी तथा रोचक सिद्ध होगा।

प्रस्तुत संग्रह की सम्पूर्ण सामग्री प्रस्तुतकर्त्ता के व्यक्तिगत खोज-संकलनों पर आधारित है। इसका संग्रह वर्ष १९८३ से १९८८ के बीच किया गया था। अधिकांश सामग्री बिहार के गोपलगंज, छपरा एवं सिवान जिलों के ग्रामीण आंचलों की महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों से प्राप्त हुई हैं। बहुत सी सामग्रियों मिथिलांचल के मुजफ्फरपुर, मगही से प्रभावित सोनपुर एवं आरा, बक्सर, देवरिया, बनारस आदि क्षेत्रों के लोगों से बातचीत के क्रम में एकत्र हुई हैं, जिन पर स्वाभाविक रूप से भाषायीय क्षेत्रीयता का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होगा। कुछ पदबन्ध पूछ कर नोट किये गये थे, किन्तु कहावतों, मुहावरों और ठेठ ग्रामीण शब्दों को व्यवहार में आते हुए सुनकर नोट किया गया। कहीं पंचायत हो रही है, कहीं झगड़ा हो रहा है, कहीं गीत-मंगल हो रहे हैं, कहीं यूँ ही कुछ लोगों की बैठकी लगी है, कहीं श्रमिक काम कर रहे हैं, ऐसे जगहों पर चुपचाप बैठकर उच्चरित वाक्यों, शब्दों व पदबन्धों पर ध्यान दिया गया और जो मकसद की चीज मिलती गई, उसे चुपचाप कागजों पर उतारा गया। नाते-रिश्तेदारी में कई बार औरतों के समीप देर रात तक बैठकर काम की चीजें नोट की गईं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलायें प्रायः सबसे अंत में भोजन करती हैं, कभी-कभी उन्हें दुबारा भोजन भी बनाना पड़ता है, इस वजह से वह देर तक जगी रहती हैं। सामग्रियों के लिए इन अवसरों का भी लाभ उठाया गया। सामग्रियों के खोज-संकलन क्रम में प्रस्तुतकर्त्ता को एक विशेष अनुभव यह हुआ कि लोक साहित्य का (मुख्यतः कहावतों, मुहावरों एवं पहेलियों का) जितना विपुल भण्डार महिलाओं के पास है, उतना पुरुषों के पास नहीं। इस संकलन की ऐसी अधिकांश सामग्रियाँ महिलाओं से ही प्राप्त हुई हैं।

लोक साहित्य के सन्दर्भ में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की स्मृतियाँ काफी जागृत एवं समृद्ध पायी जाती हैं। जब वे आपस में किसी प्रसंग पर बात-चीत अथवा झगड़ा करने लगती हैं, तब उनकी वाणी में कहावतों, मुहावरों की प्रायः एक झड़ी सी लग जाती है, किन्तु संकलनकर्त्ता को यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे जो कुछ नोट करें, उसकी जानकारी स्रोत वक्ताओं को न होने पाये, अन्यथा वक्ताओं की वाणी का प्रवाह अवरुद्ध होने लगेगा। किसी से पूछकर कहावतों, मुहावरों को तो पाया ही नहीं जा सकता, क्योंकि ये सब व्यवहार में प्रसंगात ही उपस्थित होते हैं। पूछने पर वक्ता झेंप या असमंजस की स्थिति में आ जाता है और उसकी स्मृति काम नहीं करती। जितने स्त्री-पुरुषों से इस संकलन की सामग्रियाँ प्राप्त की गई हैं, उन सबका यहाँ नाम दे पाना संभव नहीं, किन्तु लोक साहित्य एवं संस्कृति के वाहक इन ग्रामीणजनों को हम अपना हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करना एक जरूरी कर्त्तव्य अवश्य समझते हैं।

लोक साहित्य एवं लोक कलाएँ एक तरफ लोक संस्कृति के वाहक हैं, तो दूसरी ओर शिष्ट साहित्य की जन्मदात्री भी, अतः इसकी सुरक्षा होनी ही चाहिए। लेकिन आज भारत में बढ़ते औद्योगीकरण की उफान, पाश्चात्य प्रभाव एवं समय तथा दूरी पर विज्ञान की विजय तथा दूरस्थ जगहों पर आने-जाने व बस जाने के कारण प्राचीन भारतीय संस्कृति का लोक प्रचलित प्रवाह काफी कुछ बाधित भी होता जा रहा है, और इस धारा की मौलिकता के विनष्ट होने का खतरा गंभीर रूप से उपस्थित है। यह लोक साहित्य पूर्णतया प्रत्यक्ष एवं मौखिक है, इसके वाहकों का अवसान होना इस संस्कृति के एक हिस्से का अवसान होना है, अतः आधुनिकता से आहत इस लोक-साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण का कार्य तेजी से करने की आवश्यकता है। भोजपुरी में मौखिक लोक साहित्य के संग्रह एवं शोध के कार्य यद्यपि बहुत हुए हैं, फिर भी इस दिशा में कार्य की अभी व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं।

प्रस्तुत संकलन का डिजिटाइजेशन कम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित 'मालवीय सूचना प्राद्योगिकी केन्द्र' (कॉयल-नेट परियोजना) के अन्तर्गत हुआ है। विभाग के विद्वान अध्यक्ष एवं परियोजना के मुख्य निरीक्षक

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

(चीफ इन्वेस्टीगेटर) प्रो. के.के. शुक्ल जी का मैं विशेष रूप से इस लिए आभारी हूँ क्योंकि उन्होंने न सिर्फ मुझे एक 'रिसोर्स परसन' के रूप में उक्त परियोजना के अन्तर्गत कार्य करने का अवसर प्रदान किया, बल्कि कार्य-सम्पादन प्रक्रिया में किसी प्रकार की कोई असुविधा उत्पन्न न हो, इसका भी हर वक्त पूरा ख्याल रखा। प्रो. शुक्ल जी अपने विभाग के साथ-साथ उक्त परियोजना का संचालन भी जिस निष्ठा, लगन एवं प्रतिबद्धता के साथ करते हैं, वह तमाम विभागाध्यक्षों व परियोजना निदेशकों के लिए दिशा-निर्देशक एवं अनुकरणीय हो सकता है।

यह ग्रंथ हमारी लोक-संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन में सहायक तथा इसमें रुचि रखने वाले अध्येताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा विश्वास है।

१. भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, जिल्द ३, अंक१, जनवरी १९८४, (डॉ. रामबख्श मिश्र का लेख-''आधुनिक भोजपुरी भाषा के विकास के कुछ पक्ष), पृ. ३ एवं १२

२. ''वसंत'', (महात्मा गाँधी संस्थान, मोका, मॉरिशस की मासिक पत्रिका), वर्ष १, अंक २, अप्रैल १९७८- मुनीश्वरलाल चिन्तामणि का लेख-''हमारा लोक साहित्य''।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.